महात्मा गाँधी, जयप्रकाश नारायण एवं राममनोहर लोहिया के सामाजिक न्याय संबंधी विचारों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन

कुमोदनी कुमारी, डॉ0 किरण झा
शोध–छात्राा
विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्रा विभाग
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्रपफरपुर
असिस्टेंट प्रोपफेसर
दर्शनशास्त्रा विभाग
एम0डी0डी0एम0 कॉलेज, मुजफ्रपफरपुर

डॉ0 राम मनोहर लोहिया भारत के समाजवादी नेताओं में सबसे अध्कि प्रखर थे। वे केवल चिन्तक ही नहीं, एक कर्मवीर भी थे। उन्होंने अनेक समाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों का नेतृत्व किया। उन्हें समाजवादी विचारों के ‘उग्र प्रचारक’ के रूप में जाना जाता था। वे स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी सेनानी और भारत में समाजवादी आन्दोलन के अग्रणी उन्नायक थे। अन्य भारतीय समाजवादी नेताओं की अपेक्षा उनमें अध्कि बौ(िक प्रखरता, संघर्षशीलता और मौलिकता देखने को मिलती है। अन्याय के विरू(संघर्ष करने की जितनी क्षमता लोहिया में थी उतनी अन्यों में नहीं थी। उन्होंने अपनी सशक्त वाणी के द्वारा वैसे करोड़ों सुषुप्त भारतीयों को जगाया जो समाज में उपेक्षा, तिरष्कार, निर्ध्नता, पिछड़ेपन आदि के शिकार थे। इनके अन्दर उन्होंने न्याय और समानता की भूख को जाग्रत करने का प्रयास किया है ताकि वे संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ सके। भारतीय चिन्तन और जीवन में आदर्श और यथार्थ में कोई तालमेल नहीं था जिसके कारण लोगों के कथनी और करनी के बीच एक खाई बनती जा रही थी जो हमारे संकटों, कमजोरियों, विपफलताओं और निराशाओं का प्रमुख कारण था, लोहिया ने इन खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ऐसे लोगों की निष्प्राणता पर प्रहार करके उन्होंने उनके अन्दर एक नई जान पफूँक दी।

1951 में लोहिया को 3 जुलाई को समाजवादियों के अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में बुलाया गया। सम्मेलन में जर्मनी, युगोस्लाविया, अमेरिका, हवाई, जापान, हांगकांग, थाई देश सिंगापुर, मलाया, इंडोनेशिया तथा लंका भी गए। लोहिया विश्व प्रसि(वैज्ञानिक आइंस्टीन से प्रिंसटन में मिले। लोहिया ने अमरीका में सैकड़ों स्थानों पर भाषण किए। उस समय उन्होंने एशिया की समस्त सोशलिस्ट पाटियों का संगठन निर्मित करने का विचार बनाया। 25 मार्च

से 29 मार्च 1952 में एशिया सोशलिस्ट कांन्ेस हुई लेकिन इसमें लोहिया शामिल नहीं हो सके। जयप्रकाश नारायण भारतीय प्रतिनिध्मिंडल के नेता बन कर रंगून गए।

1952 में डॉ0 लोहिया कॉंग्रेस समाजवादी दल के अध्यक्ष बने। कॉंग्रेस समाजवादी दल के अध्यक्ष के रूप में लोहिया ने गाँधीजी के विचारों को समाजवादी चिन्तन में अध्कि मात्राा में स्थान देने की बात कही। उन्होंने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के सि(न्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि साम्यवादियों की तरह बड़े–बड़े कारखाने न लगाकर लघु मशीनों को महत्व दिया जाए ताकि छोटी लागत लगाकर भी अध्किाध्कि मनुष्यों को कार्य मिल सके। उन्हीं के प्रयासों के पफलस्वरूप 1953 में 'एशियाई समाजवादी सम्मेलन' सम्पन्न हुआ। कॉंग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख प्रतिपादकों में डॉ0 लोहिया के अलावे जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता, आचार्य नरेन्द्रदेव, अच्युत पटवर्ध्न, एम0आर0 मसानी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, पुरूषोत्तम विक्रमदास, युसुपफ मेहर अली और गंगाशरण सिंह थे। इन दसों समाजवादियों के बारे में लोकतंत्रा समीक्षा में छपे रामचन्द्र गुप्ता के लेख की निम्नलिखित पंक्तियाँ उल्लेखनीय है – पफये दस समाजवादी नेता, जो कि समाजवादी आन्दोलन के प्राण समझे जाते थे, अत्यन्त ही योग्य, नवयुवक, उत्तर भारत के कॉंग्रेसी और मुख्यत: शहरी मध्यवर्ग के व्यक्ति थे जिनमें से अनेकों ने अपनी राजनीतिक विचारध्रा के कारण परिवार या विवाह तक का त्याग कर दिया था। सै(ान्तिक रूप से, ये नेता इसकी तीन मिश्रित प्रवृत्तियों में विभाजित थे – 1. मार्क्सवादी, 2. अंग्रेजी मजदूर दल सरीखे सामाजिक लोकतंत्रावादी, एवं 3. लोकतंत्राात्मक समाजवादी, जिन पर कि गाँधीजी के विकेन्द्रीकरण सि(न्त तथा सविनय अवज्ञा के राष्ट्रवादी आन्दोलन का एवं वर्ग संघर्ष का प्रभाव था। प्रथम प्रवृति के प्रवर्तकों में जयप्रकाश नारायण एवं आचार्य नरेन्द्र देव प्रमुख थे, जबकि द्वितीय गुट में एम0आर0 मसानी और अशोक मेहता तथा तृतीय में अच्युत पटवर्ध्न और डॉ0 राम मनोहर लोहिया।य [1]

इनद स समाजवादी नेताओं में डॉ0 लोहिया भी एक प्रमुख समाजवादी नेता के रूप में जाने जाते थे। लोहिया के समाजवाद के सम्बन्ध् में किशोर गिरिराज उद्धृत करते हुए लिखते हैं – पफलोहिया की दृष्टि में समाजवाद की परिभाषा के लिए समता और सम्पन्नता दोनो की एकजुटता महत्वपूर्ण है। उनका समता का सपना सत्त के विकेन्द्रीकरण और समुदाय के क्रांतिकरण के जरिए साकार होना था। अपने सपने को उन्होंने विश्व इतिहास और भारत इतिहास का गहन अध्ययन करके इतिहास–चक्र के सि(ांत का प्रतिपादन किया था जिसमें हर

समाज की अंदरूनी और वैश्विक प्रक्रियाओं के दुहरे दबाव में अपने अस्तित्व की निरंतरता का सच जानने की वास्तविकता का विश्लेषण किया गया है। लोहिया मानवीय सभ्यता में निरंतर बढ़ती निकटता के सच को जानते थे, लेकिन बगैर समता और सम्पन्नता आधरित मानव सभ्यता को संभव बनाये, वह भारत और विश्व के भविष्य को आशाजनक नहीं देखते थे।’ 2

अपने समाजवादी सहयोगियों– जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता आदि से उनके नीति–विषयक मतभेद बने रहे। उन्होंने काँग्रेस और समाजवादियों के बीच मैत्री की समझौतावादी नीति को श्रेयस्कर नहीं माना। जून 1953 में अशोक मेहता ने अपनी यह विचार– शृँखला प्रस्तुत की कि ‘पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था’ की क्या ‘अनिवार्य मजबूरियाँ’ है। इसमें उन्होंने यह स्थापित करने का प्रयत्न किया कि काँग्रेस की विचारधरा समाजवादी विचारधरा के निकटतर आती जा रही है। उन्होंने यह भी प्रस्ताव किया कि ऐसी परिस्थिति में काँग्रेस और प्रजा समाजवादी दल में सै(ान्तिक मैत्री हो जानी चाहिए। लेकिन इसके जबाब में डॉ0 लोहिया ने अपना ‘समानान्तर सि(ान्त’ सामने रखा और यह युक्ति प्रस्तुत की कि समाजवादी लोग आज भी काँग्रेस से उतने ही दूर हैं जितने साम्यवादियों से और ये समानान्तर रेखाएँ अपने विचारों एवं दृष्टिकोणों के कारण कभी आपस में मिल नहीं सकतीं। उन्होंने अपनी प्रसि(पुस्तक ‘इक्वीडिस्टेन्ट थ्योरी’ जो कि 1952 में प्रकाशित हुई के माध्यम से उन्होंने समाजवादियों को काँग्रेस तथा साम्यवादियों से दूर रहने का आग्रह किया। जून, 1953 में बैतूल अध्विेशन का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने अपने सहयोगियों से भी काँग्रेस सहयोग नीति की आलोचना की। आलोचना के क्रम में उन्होंने भारत की परराष्ट्र नीति की भी कटु आलोचना की। उन्होंने नेहरू की गुट–निरपेक्ष नीति की आलोचना करते हुए कहा कि भारत को विदेशों में पक्के मित्रों की खोज करनी चाहिए। उनकी आलोचनाओं के बाद भी जब प्रजा समाजवादी दल काँग्रेस के प्रति मैत्री एवं समझौतावादी रूख अपनाता रहा तो उन्होंने 1955 में ‘भारतीय समाजवादी दल’ का गठन गठन कर लिया। इस तरह के विघटन से समाजवादियों का प्रभाव कम भले ही होता गया किन्तु लोहिया ने इस नये दल के माध्यम से जनता के समक्ष समाजवाद की एक नयी विचारधरा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

डॉ0 लोहिया उग्रवादी समाजवादी नेता थे और शायद यही कारण था कि उनका व्यक्तित्व कापफी विवादास्पद रहा। यद्दपि उन पर मार्क्स और गाँधि दोनों का प्रभाव था किन्तु न तो वे पूरे मार्क्सवादी ही बने और न पूरे गाँधेवादी ही । वस्तुतः वे एक समन्वयवादी

विचारधरा के समर्थक थे। उनका मानना था कि हमें मार्क्सवाद या गाँधिवाद का अंधनुकरण करने के बजाय, इनके सि(ांतों की अमूल्य बातों को ग्रहण करना चाहिए तभी हम सच्चे समाजवाद का निर्माण कर सकते हैं। ओंकार शरद् ने लोहिया के बारे में लिखा है – लोहिया गाँधिजी के सत्याग्रह और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे, लेकिन गाँधिवाद को अधूरा दर्शन मानते थे, वे समाजवादी थे, लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे, वे राष्ट्रवादी थे, लेकिन विश्व सरकार का सपना देखते थे, वे आधुनिकतम आधुनिक थे लेकिन आधुनिक सभ्यता को बदलने का प्रयत्न करते रहते थे, वे विद्रोही और क्रांतिकारी थे, लेकिन शांति और अहिंसा के अनूठे उपासक थे।ऱ [3]

डॉ0 लोहिया पहले समाजवादी हैं जिन्होंने बतलाया कि भारत में समाजवाद के आदर्श को साकार करने हेतु आर्थिक और सामाजिक, दोनों स्तरों पर साथ–साथ संग्राम करना होगा। उनकी मान्यता थी कि समाजवाद आर्थिक नवनिर्माण एवं सामाजिक रूपान्तरण के लक्ष्यों को समता की दिशा में साकार करने में निहित है। यह सामाजिक और आर्थिक क्रान्तियों को एक ही साथ अपने में अंतर्ग्रस्त हैं। उन्होंने स्पष्टतया यह बतलाया है कि इतिहास सभ्यताओं के “ास और विकास से जुड़ा हुआ होता है। जब सभ्यता विकास पर होती है, समाज में गतिमयता पायी जाती है और इसकी जड़े तथा अस्मिभूत संरचनायें टूटती–बिखरती है तो जातियाँ वर्गों में परिणत होने लगती है। पिफर इसी तरह जब सभ्यता का “ास होता है तब गतिमयता कमजोर पड़ने लगती है, स्थैतिकता बढ़ने लगती है, गतिक संगठन जड़ बनने लगते हैं और वर्ग जातियों में बदलने लगते हैं। वस्तुतः लोहिया ने सामाजिक विकास और “ास की व्याख्या न्यूटन की गतियों के सि(ान्तों के आधर पर की है, भले ही उन्होंने इन गतियों को समूहों के व्यवहार में प्रवर्तनशील पाया है।

लोहिया की रणनीति और कार्यशैली में दो चीजों का हमेशा समन्वय दिखता है – कार्य करत हुए पफलापफल के प्रति तटस्थ रहना, और दूसरे कोई काम करते हुए पूरी शक्ति उस काम में केन्द्रित कर देना। इस संबंध में जैसा कि गणेश मंत्राी ने लिखा है – फ्वे मात्रा सि(ांत–प्रतिपादक बु(िजीवी ही नहीं, निरंतर क्रियाशील आन्दोलनकारी भी थे। स्वातंत्र्य–पूर्व दौर में लोहिया ने 'इकॅानोमिक्स ऑफ्रटर मार्क्स' में विषमता के बुनियादी कारणों की छानबीन की थी। उन्होंने मार्क्स के विचारों के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़ी उन्नीसवीं सदी के यूरोप की विशेषताओं को पहचानने की कोशिश की है, तो दूसरी ओर भारत जैसे

निर्ध्न और अविकसित एशियाई देश की अपनी परिस्थितियों के संदर्भ में मार्क्सवाद की जाँच–पड़ताल की है। लोहिया इस समाजशास्त्रीय तथ्य को मानकर चल रहे थे कि बड़े से बड़ा विचारक अपने देश–काल की परिस्थितियों से बंध होता है। उसकी सोच और निष्कर्षों का एक बड़ा हिस्सा इन परिस्थितियों के बाहर असंगत हो जाता है। कमोबेश यही बात सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त की जाने वाली परिकल्पनाओं पर भी लागू होती है। पूँजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद भी इसके अपवाद नहीं हैं। सार्वभौमिकता के तमाम दावों के बावजूद ये सभी देश–काल की परिस्थितयों की उपज है। जिस समय विषमता के सभी रूपों पर प्रहार और देश के शोषितों–दलितों में समता की चेतना जगाने तथा उसे तीव्रतर करने का दायित्व लोहिया के जिम्मे आया, वह अत्यन्त विकट और विषम परिस्थिति थी।’[4]

इस प्रकार लोहिया का विचार कापफी मौलिक प्रतीत होता है। वस्तुतः उनकी मौलिकता, भारत की विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक विषमताओं के संदर्भ में उनके समाजवादी सि(ान्तों के प्रतिपादन में निहित है। उन्होंने समाजवाद को स्वयं में परिपूर्ण एवं पर्याप्त राजनीतिक–सामाजिक–सांस्कृतिक नव–निर्माण के विचारवाद के रूप में पेश किया है और पूँजीवाद तथा साम्यवाद की बुराइयों से इसे उन्मुक्त बनाया है। साम्यवाद की आलोचना करते हुए वे यह बतलाना चाहते हैं कि यह पूँजीवादी आर्थिक संबंधें को तो समाप्त करना चाहता है परन्तु पूँजीवादी उत्पादन–प्रक्रियाओं को नहीं छोड़ता। ऐसी परिस्थिति में समाजवादी मूल्यों को मानवीय संबंधें में परिणत नहीं किया जा सकता। वस्तुतः स्वातंत्रय और जनतन्त्रा समाजवाद के लिए आवश्यक है, अतः यह कहा जा सकता है कि तानाशाही से मुक्त होने के कारण समाजवाद साम्यवाद की अपेक्षा अध्कि श्रेयष्कर है।

वे लोहिया ही थे जो राजनीति की गंदी गली में भी शु(आचरण की बात करते थे। वे एकमात्रा ऐसे राजनेता थे जिन्होंने अपनी पार्टी की सरकार से खुलेआम त्यागपत्रा की मांग की, क्योंकि उस सरकार के शासन में आंदोनकारियों पर गोली चलाई गई थी। ध्यान रहे स्वाधीन भारत में किसी भी राज्य में यह पहली गैर क्रांग्रेसी सरकार थी। वे डॉ0 लोहिया ही थे जिन्होंने पूरे हुंकार के साथ कहा कि ‘जिंदा कौमे पाँच साल इंतजर नहीं करती।’ डॉ0 लोहिया की इस उक्ति का मुख्य उद्देश्य आम जन खासकर युवाओं को सचेत करना था, साथ ही लोकतंत्रा में विपक्ष की जीवंत भूमिका का भी स्मरण कराना था। इस संबंध में प्रो0 आनंद

कुमार आज की नौजवान पीढ़ी को लक्ष्य कर कहते हैं, फआज नई पीढ़ी बहुत सारे सपनों के साथ आगे बढ़ना चाहती है। पहले की पीढ़ी को वह परजित पीढ़ी मानती है। आज वैश्वीकरण का जमाना है, इसमें आगे बढ़ना है और येन–केन–प्रकारेण विश्व के जो श्रेष्ठतम सुख–साध्न है, उनको हासिल करना है। अब नई पीढ़ी के इस सपने के साथ चच्चाई के रास्ते को जोड़ने का उपाय सोचना चाहिए और यह बहुत कठिन नहीं।त्र [5]

इस प्रकार स्पष्ट है कि डॉ0 लोहिया का व्यक्तित्व असीमित था। उनका व्यक्तित्व सांगठनिक के साथ–साथ वैचारिक एवं नैतिक प्रेरणा–पुरूष का व्यक्तित्व था जिसमें यथार्थ चेतना ;|बजनंस ब्वदेबपवनेदमेद्ध और संभाव्य चेतना ;च्वजमदजपंस ब्वदेबपवनेदमेद्ध के प्रत्ययमूलक तंतु विद्यमान थे। विखण्डन के दौर में लोकिया सभी को एक सूत्रा में जोड़ने की बात कह रहे थे। वे संयुक्त परिवार–व्यवस्था की संरचना के दरकने और उसकी टूटन को लेकर भी चिंतित थे। मध्ु लिमये के शब्दों में, फलोहिया में एक 'भीतरी आँख' थी जो सपने देखती थी। उन्होंने समस्त मिथ्यावाद, पाखण्ड, ध्ूल–ध्क्कड़ और गरीबी के भीतर बहने वाली 'प्रगति की अन्तर्धरा' को खोज लिया था और उसी से 'चेतना के जगत' का विस्तार मानते थे। वे उस अन्तर्धरा को हाथ में लेना, संभालना चाहते थे। लोहिया इस चीज से परिचित थे कि देश में यथास्थितिवादी ताकतें मजबूत हैं जिन पर शीघ्रता से काबू नहीं पाया जा सकता था। युगों के जड़त्व से आच्छादित विघटन, राज्य समेत सभी संस्थाओं पर अपना प्रभाव डाल चुका था। विघटन की यही स्थिति, विधनसभाओं, अदालतों, राजनीतिक दलों, प्रेस तथा अकादमिक समुदायों में भी थी। स्वयं का संवर्ध्न जीवन का नियंत्राण सि(ांत बन चुका था। बावजूद इसके उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी, हार नहीं मानी। लोहिया अलग–थलग रह कर, कुर्सी पर बैठकर राजनीति करने वाले नेता नहीं थे। वह एक स्वप्नद्रष्टा तथा उसे साकार करने वाले, दोनों ही थे। उनका लक्ष्य था हमारे समाज में मौलिक परिवर्तन व उसके पुनर्संयोजन जो भारत को एक विश्व–समुदाय में बराबर का सदस्य बना देगा।त्र [6] यही वजह रही है कि लोहिया अपने जीवन में दो बार सांसद का चुनाव हारे और दो बार जीते। हार के प्रसंगों को उन्होंने समाजवाद को मजबूत करने के लिए इस्तेमाल किया।

अंत में यह कहा जा सकता है कि डॉ0 लोहिया वास्तव में समाजवादी आन्दोलन के वैसे कीर्ति–स्तम्भ थे जिन्होंने हर बात को भारत की अखंडता की दृष्टि से सोचा था। समाजवादी नेताओं में एक ओर जयप्रकाश और नरेन्द्रदेव पर जहाँ मार्क्सवाद का सबसे अध्कि

प्रभाव रहा वहीं दूसरी ओर लोहिया पर गाँधीवादी विचारधरा का प्रभाव अध्कि देखा गया। वस्तुतः लोहिया समाजवादी विचारधरा के वैसे गरम प्रवक्ता थे जिनके भाषण आँकड़ों और आलोचनाओं से भरे रहते थे। उन्होंने एक अध्येता की भाँति आजीवन भारतीय इतिहास, भारतीय सभ्यता और संस्कृति, भारत के महापुरूष एवं व्यक्तित्व का खोजबीन करते रहे। उनकी दृष्टि का पफलक व्यापक और अनुसंधन का स्रोत संपूर्ण विश्व का समाज–दर्शन था।

सन्दर्भ–सूची :–

1- लोकतन्त्रा सीमक्षा : रामचन्द्र गुप्त का लेख 'भारतीय समाजवादी दल के बदलते आयाम : एक विश्लेषण' जनवरी–मार्च, 1972,, पृ0–117–118.

2- किशोर, गिरिराज, 'अकार', त्रौमासिक पत्रिाका, अगस्त–नवम्बर, 2010, पृ0–1

3- ओंकार शरद् : लोहिया के विचार, पृ0–10.

4- मन्त्राी, गणेश, 'मार्क्स, गाँधी और समसामयिक सन्दर्भ', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0–138.

5- कुमार, प्रो0 आनंद, 'व्यक्तिवाद केन्द्रित समाज है' हस्तक्षेप ;साप्ताहिक परिशिष्टद्ध, राष्ट्रीय सहारा, 18 दिसम्बर 2010.

6- किशोर, गिरिराज, 'अकार', त्रौमासिक पत्रिाका, अगस्त–नवम्बर, पृ0–18.